HINDI

LOTUS BUDS

ARTICLES

मातृभाषा है परेशान

(नुक्कड़ नाटक)

पात्र परिचय :-

मातृभाषा

उद्घोषक 1

उद्घोषक 2

उद्घोषक 3

(पर्दा उठता है, और एक चौराहे का दृश्य प्रस्तुत होता है)

उद्घोषक 1:- आओ! आओ! नाटक देखें, सब मिलकर नाटक देखें।

उद्घोषक 2:- अंग्रेज़ी हमारे जीवन का हुनर हो सकती है, मगर हिंदी हमारे अभिमान की चुनर है। इस के साथ, सभी को नमस्कार ! आज हम सब मिलकर आपके सामनं अपना नाटक प्रस्तुत करेंगे । आइये! जानें की मातृभाषा क्यों परेशान है और कौन इसे परेशान कर रहा है।

उद्घोषक 3:-इस नाटक का उद्देश्य अन्य भाषाओं का विरोध करना नहीं है । यह नाटक केवल सन्देश की दृष्टि से रचा गया है ।

उद्घोषक 1:सुनो सुनो भाई, सुनो सुनो ! क्या हो गया है हाल ! मातृभाषा है हैरान , मातृभाषा है परेशान ।

क्या ये सच है ?

सहगान (Chorus):- हाँ भाई हाँ !

मातृभाषा:-अपने ही देश में पराई हो गयी। ना जाने मैं कहाँ खो गयी ।

मैं हो गई परेशान मैं हो गई परेशान,

अपनी भाषा बोलते, आती जहाँ लाज,

बन सकता है वह देश कैसे दुनिया का सरताज,

मैं तुमको भूल न पाई, कैसे तुम मुझको भूले,

मैं वह भाषा हूँ , जिसमें तुम अपना बचपन खेले,

देखो इस भीड़ में कहाँ मैं खो गयी,

ऐसा लगता है अब सो गयी,

मैं कहाँ से शुरु करूँ , यह कहाँ आ गई,

सरजमीं से चली, आसमान पा गई,

वे हसीन पल मेरे फिर लौटा दो मुझे,

मैं हूँ हिंदी - मातृभाषा वतन की, बचा लो मुझे।

उद्घोषक 2:- माँ आप तो हमारी मातृभाषा हैं, सम्मान की अधिकारी हैं, आपकी यह अवस्था कैसे हुई?

मातृभाषा:- बेटा बदलाव का समय है। लोग मुझे भूल रहे हैं। मैं सकंट में हूँ। मैं यह नहीं कहती की अंग्रेजी मत बोलो पर अपनी संस्कृति को तो मत भूलो ।सही कहा आपने राम राम! नमस्कार! जैसे सम्बोधन की जगह हैलो , हाय ने ले ली है। यह शब्द हमारी सभ्यता के अनुसार दुख का संबोधन होता है । शुक्रिया ,धन्यवाद जैसे आभार प्रकट करने वाले शब्द भी थैंक यू पर सिमट गये हैं।

हम सब शान्त बैठकर अपनी मातृभाषा को परेशान होते नहीं देख सकते , मिलकर प्रयास करना होगा और माँ का खोया हुआ गौरव वापस लाना होगा।

उद्घोषक 1:-

स्वार्थ को छोड़ना होगा ,

हिन्दी से नाता पुनः जोड़ना होगा,

हिन्दी का करे कोई अपमान,

कड़ी सजा का हो प्रावधान

हम सबकी है यह पुकार,

सजग हो हिन्दी के लिये सरकार।

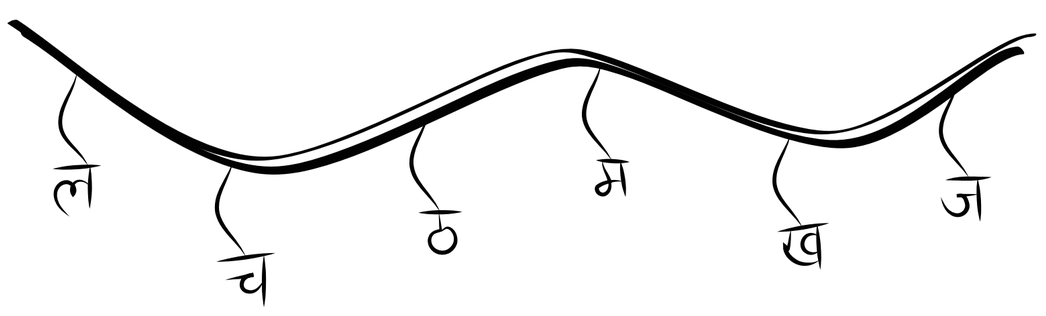

उद्घोषक 3:- भाईयों और बहनों अगर यही हाल रहा तो आज मातृभाषा परेशान है कल अपंग हो जायेगी और अपने ही देश में विलुप्त हो जायेगी।

उद्घोषक 1:- हम सब मिलकर अपनी मातृभाषा की रक्षा करेंगे और इसे विश्व स्तर पर पहचान दिलायेंगे।

मातृभाषा:- इस बात का तो मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी समस्या का समाधान मेरे देशवासी ज़रूर निकाल लेंगे और मेरा खोया हुआ गौरव मुझे वापस मिलेगा।

सहगान (Chorus) :-

हिन्दी से भारतीयता की पहचान,

आओ करें इसका सम्मान,

हिन्दी में नौ रसों का श्रृंगार,

समृद्ध साहित्य इसमें अपार,

हिन्दी हमारी सभ्यता की संपदा,

देश की गौरव गाथा गूँजे सब जगह,

हिन्दी को व्यवहार में लायें,

जन - जन कि इसे भाषा बनायें,

यह मेरे देश की शान,

मेरा गौरव मेरा अभिमान,

करें सर्वज्ञ हिन्दी का प्रसार,

यही हिन्दी दिवस मनाने का आधार।

(पर्दा गिरता है।)

- अदविका बगड़िया, ९-‘ डी’

व्यायाम का महत्त्व

पात्र:

राहुल

सुमित

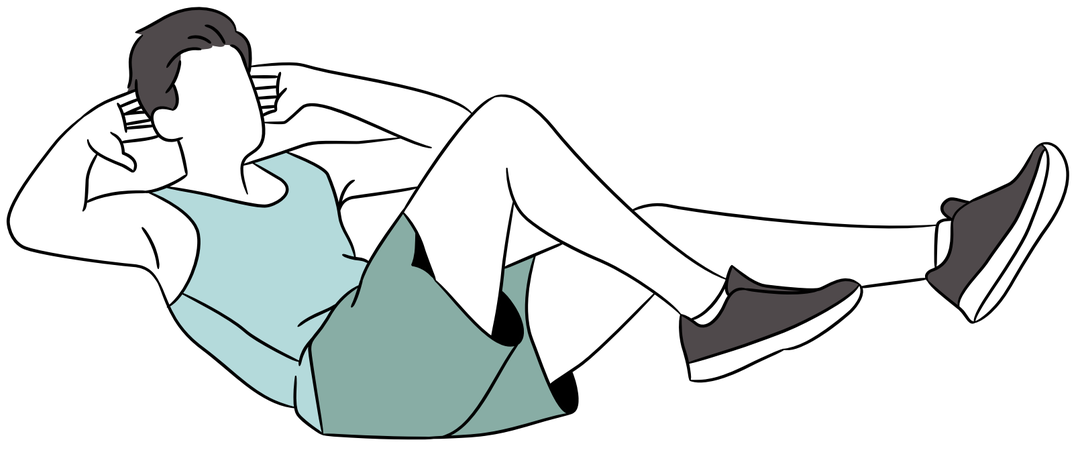

राहुल: नमस्ते सुमित! कैसे हो?

सुमित: नमस्ते राहुल! मैं ठीक हूँ। और तुम?

राहुल: भला तो हूँ! और तुम बताओ कि ये क्या ज़माना चल रहा हैं?

सुमित : यार कुछ खास नहीं हूँ, पढ़ाई के बाद और घर आके कामों में लगा हूँ। और हाँ! पार्क में तुझे सुबह पहले ही देखा था, तू पार्क में कहाँ देख रहा था?

राहुल: मैं सुबह-सुबह व्यायाम कर रहा था। तू भी कर। तुझको करना चाहिए। व्यायाम करने के कई फायदे होते हैं। स्वास्थ और मन की शांति दोनो के लिए लाभकारी होते हैं।

सुमित: हाँ! पर मेहनत होती है बहुत सुबह उठकर जाना।

राहुल: शुरुआत में थोड़ी मुश्किल होती है, लेकिन धीरे-धीरे आदत बन जाती है। बस तुम्हें थोड़ी दृढ़ता की जरूरत है।

सुमित: तुम सही कह रहे हो। क्या-क्या फायदे हैं व्यायाम के?

राहुल : व्यायाम से शरीर तंदुरुस्त रहता है, इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और बीमारियाँ दूर रहती हैं। इसके अलावा, यह दिल की बीमारियों, मधुमेह और मोटापे जैसी समस्याओं से भी बचाता है। मानसिक तनाव कम करने में भी व्यायाम बहुत मदद करता है।

सुमित: वाह! मैंने तो इतने सारे फायदे कभी नहीं सोचे थे। लेकिन क्या सिर्फ़ सुबह ही व्यायाम करना सही होता है?

राहुल : नहीं, व्यायाम का समय महत्वपूर्ण नहीं है। सुबह, शाम, या दोपहर में जब भी तुम्हें समय मिले, तब कर सकते हो। बस नियमितता बनाए रखना जरूरी है।

सुमित: अच्छा, और कोई खास व्यायाम है जो मैं शुरू कर सकता हूँ?

राहुल: शुरुआत में हल्के व्यायाम से शुरू करो, जैसे पैदल चलना, जॉगिंग या साइकिल चलाना। बाद में योगा या जिम की भी आदत डाल सकते हो।

सुमित: तुम्हारे सुझाव बहुत अच्छे हैं। मैं कल से ही शुरू करता हूँ। क्या तुम मेरे साथ आ सकते हो?

राहुल: बिलकुल, मैं तुम्हें गाइड कर सकता हूँ। साथ में व्यायाम करना और भी मजेदार होता है।

सुमित: धन्यवाद, राहुल। तुमने मुझे प्रेरित किया। अब मैं नियमित व्यायाम करूँगा।

राहुल: यह जानकर खुशी हुई, सुमित। याद रखना, स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। व्यायाम से खुद को स्वस्थ और तंदुरुस्त रखो।

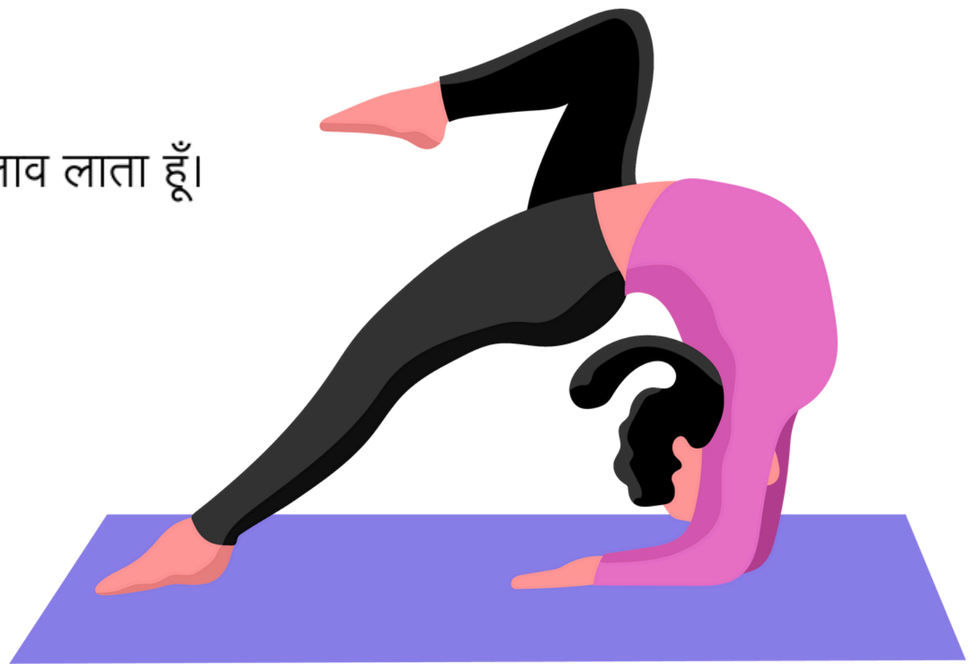

सुमित: जरूर, धन्यवाद दोस्त। मैं आज ही अपनी दिनचर्या में बदलाव लाता हूँ।

राहुल: अच्छा, तो कल सुबह पार्क में मिलते हैं।

सुमित: हाँ, मिलते हैं। धन्यवाद, राहुल!

राहुल: ध्यान रखना, व्यायाम जीवन का अहम हिस्सा होना चाहिए।

सुमित: सही कहा तुमने। अब मैं इसे गंभीरता से लूँगा।

राहुल: यही सही निर्णय है। अच्छा, अब मैं चलता हूँ। मिलते हैं कल सुबह।

सुमित: ठीक है, राहुल। अलविदा!

- **केसर शर्मा, १० 'ए'**

<u>नाटक: स्क्रीन का जादू और उसका असर</u>

पात्र:

1. रिया (12 साल की बच्ची)
2. मम्मी (रिया की माँ, स्नेही और सख्त)
3. अध्यापिका (स्कूल की शिक्षिका, अनुशासनप्रिय)
4. कीर्ति (रिया की सहेली, चंचल)

पहला दृश्य: *(घर का कमरा, रिया मोबाइल पर गेम खेल रही है)*

मंच सजावट: *एक साधारण घर का कमरा, जिसमें एक सोफा, एक टेबल और एक टीवी है। रिया सोफे पर लेटी हुई है और मोबाइल पर गेम खेल रही है।*

मम्मी: (गुस्से में, कमरे में प्रवेश करते हुए) रिया! फिर से मोबाइल पर गेम खेल रही हो? तुम्हारी आखें ख़राब हो जाएंगी।

(रिया सोफे पर लेटी हुई है और मोबाइल पर गेम खेल रही है।)

मम्मी: कितनी बार कहा है कि बाहर जाकर खेलो, या फिर कुछ घर का काम कर लो! मैं अकेले कितना काम करूँ!

रिया: (आलस से, मोबाइल से नजरें हटाते हुए) मम्मी, बस पाँच मिनट और। ये लेवल पूरा करना है, बहुत मुश्किल है।

मम्मी: (जोर देकर) नहीं, अब बिल्कुल नहीं। उठो, और घर के काम में करने में मेरी मदद करो।मोबाइल में इतना गेम खलेने से तुम्हारी आखों में जलन, सूजन व सूखापन आ सकता है।

रिया: (बड़बड़ाते हुए) उफ्फ, कितना उबाऊ काम है ये। मुझसे न हो पायेगा। गेम खेलने दो ना।

मम्मी: (हंसते हुए) अरे, बर्तन धोने में भी तो एक खेल है। देखो, कौन ज्यादा जल्दी कर सकता है, तुम या मैं?

रिया: (आंखें घुमाते हुए) हाँ, बहुत मजाकिया। आती हूँ , पांच मिनट माँ।

दूसरा दृश्य: *(स्कूल का कक्षा)*

मंच सजावट: *एक कक्षा, जिसमें मेज़ और कुर्सियाँ हैं। अध्यापिका ब्लैकबोर्ड के पास खड़ी हैं। रिया अपनी किताबों के पीछे छुपी हुई है।*

अध्यापिका : (रिया से) रिया, तुम कक्षा में कभी भी ध्यान क्यों नहीं देती हो और तुम्हारा गृहकार्य कहाँ है?

रिया: (शरमाते हुए) मैम, कल मुझे एकदम समय नहीं मिला, इसलिए कार्य पूरा नहीं हो पाया।

अध्यापिका : (सख्त लहजे में) रिया, ये तुम्हारी आदत ठीक नहीं है। टीवी और मोबाइल से दूरी बनाओ और पढ़ाई पर ध्यान दो। क्या तुम जानती हो कि इन चीज़ों का तुम्हारे स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है?इससे आखों के साथ साथ दिमाग में भी हानि पहुँचती है। हम एकाग्र मन से शांति पाते है। एक जगह बैठे रहने से शारीरिक हानि भी होती है।

रिया: (धीरे से) जी मैम।

तीसरा दृश्य: *(पार्क में, रिया की सहेली उसके पास आती है)*

मंच सजावट: *एक खूबसूरत पार्क, जिसमें बच्चे खेल रहे हैं। रिया एक बेंच पर बैठी है और मोबाइल में व्यस्त है।*

कीर्ति : (हंसते हुए, रिया के पास आती है) रिया, चलो ना, झूलों पर खेलते हैं। बहुत मजा आएगा।

रिया: (मुंह बनाते हुए) नहीं, मुझे नहीं खेलना। मैं घर जाकर टीवी देखना चाहती हूँ।

कीर्ति : (हँसते हुए) तुम हमेशा टीवी और मोबाइल में क्यों रहती हो? चलो, थोड़ा बाहर खेलते हैं, बहुत मजा आएगा। देखो, वो बच्चों का झूला कितना मजेदार लग रहा है!

रिया: (सोचते हुए) अच्छा, चलो देखते हैं, लेकिन ज्यादा देर नहीं।

चौथा दृश्य: *(घर का कमरा, मम्मी और रिया बात कर रही हैं)*

मंच सजावट: *पहले जैसा ही घर का कमरा। रिया और मम्मी सोफे पर बैठे हैं।*

रिया: मम्मी मेरा सर बहुत दुःख रहा है।

मम्मी: (प्यार से) रिया, तुम समझती क्यों नहीं? टीवी और मोबाइल से तुम्हारी आँखों पर बुरा असर पड़ता है। और तुम्हारा शरीर भी कमजोर हो जाएगा। दुष्टों की करामात है।

रिया: (सोचते हुए) मम्मी, सच में? लेकिन गेम और टीवी बहुत मजेदार होते हैं।

मम्मी: (समझाते हुए) हाँ, पर बाहर खेलना और शारीरिक हिलना-डुलना भी बहुत जरूरी हैं। इससे तुम्हारा शरीर स्वस्थ रहेगा और मन भी खुश रहेगा। और घर के कामों में मदद करने से तुम्हें जिम्मेदारी और अनुशासन की भी सीख मिलेगी।

रिया: (मुस्कुराते हुए) ठीक है मम्मी, मैं बाहर खेलूंगी और घर के कामों में भी मदद करूंगी।

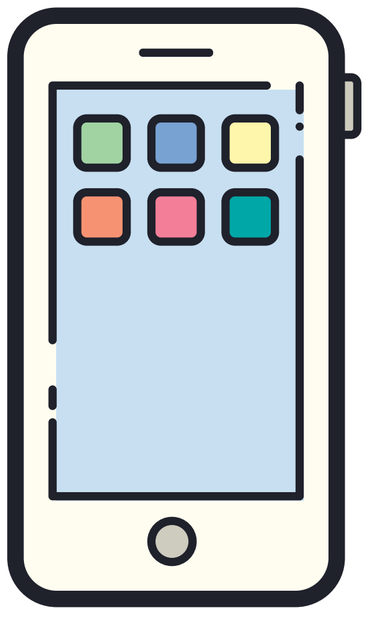

मम्मी: (गले लगाते हुए) यही मेरी प्यारी बेटी है।

निष्कर्ष: *(रिया और मम्मी एक साथ)*

मम्मी: (रिया से) देखो रिया, मोबाइल और टीवी से थोड़ी दूरी बनाकर अगर तुम बाहर खेलोगी और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दोगी तो तुम्हारा जीवन स्वस्थ और खुशहाल रहेगा। और याद रखना, स्क्रीन का जादू सिर्फ दिखावटी है, असली खुशी तो बाहर खेल में है।

रिया: (मुस्कुराते हुए) हाँ मम्मी, मैंने समझ लिया। स्क्रीन का जादू केवल आंखों का धोखा है, असली मजा तो जीवन के रंगों में है।

- इशिका धानुका , ९-'सी'

सच्चा प्रेम

प्रेम एक खूबसूरत भावना है, कई बार व्यक्ति मोह को प्रेम मान लेते है, प्रेम में परीक्षा लेता है और प्रेम का प्रमाण मांगता है, किन्तु व्यक्ति भूल जाता है की यह प्रेम नहीं है ,प्रेम तो वह भावना है जहाँ दोनों व्यक्ति एक दूसरे के प्रति समर्पित हो जाते है, वह एक हो जाते है।

इस नाटक में मीरा और राकेश के बलिदान के सहारे हम जानेंगे सच्चे प्रेम का अर्थ।

पात्र -

१)मीरा - एक गरीब घर की दलित स्त्री और इस नाटक में राकेश की प्रेमिका

२)राकेश - एक अमीर ब्राह्मण और मीरा का प्रेमी

३)शीतल- मीरा की माँ

४)जीवन - मीरा के पिता

५)पूजा- राकेश की माँ

६) सूरज- राकेश के पिता

७)महेश और अनजन - मीरा को धमकाने के लिए जिन्हें काम पर रखा गया

अंक १

मीरा और राकेश के परिवार वालों को यह ज्ञात हो जाता है कि वह एक दूसरे से प्रेम करते है, दोनों परिवार वाले यह जानकर मीरा और राकेश से अत्यंत क्रोधित हो जाते है, और उनके विवाह के लिए मना कर देते है।

मीरा के घर

मीरा- माँ मैं उससे अत्यंत प्रेम करती हूँ!

शीतल- तुम्हारा दिमाग ख़राब हो गया है क्या मीरा! तुमने राकेश से यह 'प्रेम' करने से पहले यह भी नहीं सोचा की वह मुख़र्जी खानदान का पुत्र है, वह एक ब्राह्मण है, तुमने उसकी तरफ आँख उठाकर भी कैसे देखा!

जीवन- मीरा तुम जानती हो की समाज में हमारी क्या इज़्ज़त, हम सिर्फ लोगों के लिए काम करते है, हमें खुद के सुख के लिए काम करने का कोई अधिकार नहीं , मैंने तुम्हे मुख़र्जी घर में एक सेवक की तरह काम करने के लिए वहां भेजा था, नाकि प्रेम करने के लिए, तुमने मुझे आज बहुत निराश किया है मीरा, बहुत निराश! और तुम इतनी भोली हो, तुम्हें लगता है की राकेश इतने बड़े घर का बेटा तुमसे प्रेम करेगा? वह तुम्हारा सिर्फ इस्तेमाल कर रहा है, तुम्हें धोखा दे रहा है, उसके जाल में मत फँसो पुत्री।

मीरा- आप यह सब क्या कह रहें हैं, माँ आप नहीं जानतीं प्रेम कितना पवित्र भाव है, पिताश्री, मुझे मेरे प्रेम पर विश्वास है, मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती , मैं राकेश से विवाह करुँगी!

राकेश के घर:

सूरज- राकेश तुम मेरे पुत्र नहीं हो सकते ! यह हमारे परिवार पर कलंक है, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, दासी से प्रेम करने की , तुमने एक बार भी नहीं सोचा की जब समाज में यह बात फैलेगी कि मेरा पुत्र राकेश मेरे घर की कामवाली से विवाह करना चाहते है तो लोग क्या सोचेंगे?

राकेश- नहीं जानता था की प्रेम करने से पहले मुझे व्यक्ति के दिल को देखने के पहले उसकी जाति देख कर उससे प्रेम करना पड़ेगा , जब मैं अगले जन्म इस पृथ्वी में जन्म लूँगा तब में ज़रूर यह बात याद रखूँगा की मनुष्य के पहले उसके जाती क्योकिं मेरे परिवार को अपने इकलौते पुत्र के पहले समाज दिखता है, अनजाने लोग दिखते हैं जिनको आपने कभी न देखा और न देखेंगे।

पूजा- जुबान संभालो राकेश, अपने पिता से बात करने का यह तरीका नहीं है!

राकेश - माँ, मैं माफ़ी चाहती हूँ परन्तु ऐसा प्रेम मेरे लिए बहुत ज़रूरी, मैं मीरा से बहुत प्रेम करता हूँ और उसके लिए कुछ भी कर सकता हूँ।

सूरज- यह विवाह कभी नहीं होगा, अगर तुमने कभी विवाह किया उससे, तो तुम मेरे पुत्र नहीं कहलाओगे।

अंक २

राकेश के माता और पिता मीरा के घर कुछ व्यक्ति भिजवाते है जिन्हे वह मीरा को धमकाने का काम देते है , धमकी यह है की अगर मीरा राकेश से विवाह करती है तो वह राकेश के जीवन को नष्ट कर देंगे, उसको जीवन में आगे बढ़ने नहीं देंगे, मीरा जानती थी की राकेश को बैंक अफसर बनना था, वह उसका सपना था, तो मीरा ने अपने प्रेम के लिए एक बड़ा निर्णाय लिया।

महेश और अनजन - तो तुम ही हो मीरा!

मीरा- आप लोग कौन है, मेरे घर क्यों आये हैं?

अनजन- देख मीरा ज़्यादा नाटक मत करो, मेरी बात कान खोल कर सुन लो, अगर तुमने राकेश से विवाह किया तो जान लेना, तुम उसके जीवन के बर्बादी के लिए ज़िम्मीदार होगी ।

महेश- हाँ, हम उसके जीवन को नष्ट कर देंगे, तो क्या तुम एक स्वार्थी प्रेमी बनोगी और राकेश की तबाही सुनिश्चित करोगी?

मीरा- देखिये आप लोग यहां से जाएं, मैं आप लोगो को नहीं जानती , आप राकेश को कैसे जानते हैं? आप उसके साथ ऐसा क्यों करेंगे?

अनजन- हम जो कोई भी हों, तुम मेरी बात मानो और राकेश को सुरक्षित करो, कल शाम ६ बजे गंगा सरोवर के पास उसे बुलाओ और अपना रिश्ता उससे तोड़ो , अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो हम राकेश को तुम्हारे सामने मार भी सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं तुम पर उसके खून का दोष डाल देंगे और तुम तो हो भी एक गरीब दलित ,समाज तुम्हारा कभी विशवास नहीं करेगा , तो रात भर सोचो मीरा, और कल अगर तुम्हारे कदम गंगा सरोवर नहीं पहुँचे तो तुम शायद राकेश के कदम कभी न सुन पाओगी.....

<u>अंक ३</u>

मीरा राकेश को चिट्ठी लिखती है और उसे अगले दिन शाम ६ बजे गंगा सरोवर पर मिलने के लिए बुलाती है, महेश और अनजान गंगा सरोवर पर बंदूक के साथ पेड़ के पीछे छुपकर सब बातें सुनते हैं क्या यही होगा राकेश और मीरा की प्रेम कहानी का अंत?

मीरा- कैसे हो राकेश?

राकेश- क्या बताएं मीरा, कुछ समझ नहीं आता, बस तुम्हारे प्रेम के सहारे जी रहा हूँ।

मीरा- जानती हूँ , तुम्हारा दर्द समझती हूँ मैं... .

राकेश - तो बताओ, मुझे इतनी शीघ्र आज यहां क्यों बुलाया, क्या तुम ठीक हो?

मीरा- हाँ मैं ठीक हूँ , बस तुमसे एक बात कहनी थी जो मैंने तुमसे कई महीनों से छुपाई है... ...

राकेश- मीरा कहना क्या चाहती हो?

मीरा- राकेश मैंने तुमसे कभी प्रेम नहीं किया , वह तो सिर्फ एक बाहाना था , मैं तो तुम्हारे घर में एक नौकर की तरह काम करती ताकि मुझे पैसे मिलें, ताकि दहेज़ के पैसे इकट्ठा कर पाऊँ, क्योंकि मैं तो गजराल से प्रेम करती हूँ ,मुझे तो बस पैसे चाहिए थे, ताकि मैं अपने विवाह और दहेज का इंतेज़ाम कर पाऊँ, और एक ब्राह्मण घर में तो पैसे ही पैसे!

जब मैं काम न करती तब मैं तो पूरे दिन घर में खाली पड़ी रहती थी और तुम भी सिर्फ किताबों के साथ, तो मैंने सोचा क्यों न कुछ मज़ा किया जाए, तो बस इस प्रेम का नाटक तुम्हारे साथ किया, कितने भोले हो तुम, कुछ समझ न पाए!

तोह बस पैसे के लिए मैंने यह नाटक किया और अब मेरे पास सब तैयार है, कुछ हफ़्तों के बाद मैं अपने प्रेमी, गजराल के साथ धूम धाम से विवाह करूँगी!

राकेश- यह सब झूठ है , ऐसा नहीं हो सकता। तुम और मैं ही जानते हैं मीरा, की हम एक दूसरे से कितना प्रेम करते है, तुम यह क्या कह रही हो, क्यों कर रही हो, मैं तुम्हारे लिए पूरी दुनिया से लड़ने के लिए तैयार हूँ, और तुम मुझे यह सब कह रही हो?

मीरा- उफ़, मैं जानती थी तुम एक बहुत बड़े गधे थे राकेश, मैं तुमसे कोई प्यार नहीं करती थी , और हां, विवाह के बाद मैं एक दूसरे गॉव चली जाउंगी अपने गजराल के साथ, तो मुझे ढूढ़ने का प्रयास बिलकुल भी मत करना!

राकेश- मीरा यह तुमको क्या हो गया है? , मुझे तुम्हारी कोई बात पर विश्वास नहीं , पर अगर यह बात सच है तो मैं आज, से इस क्षण के पश्चात, प्रेम पर विश्वास नहीं करूँगा और न मैं कभी किसी से प्रेम करूँगा!

मीरा- मेरे पास और कुछ कहने का वक़्त नहीं है, मैं चलती हूँ, अपना ख्याल रखना राकेश... .

मीरा यह कहकर वहाँ से मुड़ जाती है, उसके नेत्रों में पानी की लहर भर आती है और उसका चेहरा लाल हो जाता है, वो अपने दुप्पटे को मुँह में दबती है और वहाँ से भाग जाती है , वो ऐसा दौड़ती है की पीछे मुड़कर बिलकुल के न देखती।

<u>१५ वर्ष पश्चात-</u>

उस दिन राकेश बिखर गया था, उसने अपना सामान बांधा अपने माता पिता को प्रणाम किया और उस दिन जब अपने घर की चौखट को लांघा उसने कभी मुड़ कर नहीं देखा और गाँव छोड़ कर चला गया।

मीरा ने कभी किसी गजराल से विवाह नहीं किया , और न अपने जीवन में एक दूसरे राकेश से प्रेम किया , दोनों राकेश और मीरा ने कभी विवाह नहीं किया , परन्तु अंदर ही अंदर एक दूसरे से अनंत प्रेम करते रहे , पर बिना जाने, मृत्यु तक वे दोनों एक दूसरे से सच्चा और पवित्र प्रेम करते थे।

- देवांशी चौधुरी , १२ सी

<u>नाटक का नाम : स्मृतियों की खुशी</u>

(दृश्य: एक साधारण मध्यमवर्गीय घर का बैठक कमरा)

माँ:(रोते हुए) अरे बेटा, तुम्हारे पापा अब हमारे बीच नहीं रहे। अब हम क्या करेंगे? उनकी अनुपस्थिति में हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं है।

बेटा: (माँ को गले लगाते हुए) माँ, हम साथ मिलकर इस कष्टप्रद स्थिति से गुजरेंगे। पापा हमें हमेशा दृढ़ता व आशा को ह्रदय में स्थापित रखने की प्रेरणा देते थे। हमें उनकी विचारधारा और सज्जन स्मृतियों को भूलना नहीं चाहिए।

बेटी: (आंखों में आंसू) भैया, पापा हमेशा कहते थे कि अधिकांश लोगों के लिए जीवन में खुश रहना बहुत कठिन है । वे पूरे जीवन संतुष्टि के पथ पर अग्रसर थे।

बेटा: बिल्कुल सही बहन। हम एक-दूसरे का सहारा बनेंगे और खुश रहने की कोशिश करेंगे।पापा चाहते थे कि हम मुश्किल समय में भी हार न मानें।

(कुछ समय बाद)

माँ: (थोड़ा मुस्कुराते हुए) बच्चों, आज मैंने तुम्हारे पापा की पसंदीदा मिठाई बनाई है। चलो, मिलकर खाते हैं।

(सब मिलकर मिठाई खाते हैं और पापा की यादों में हंसते-मुस्कुराते हैं)

बेटी: (मुस्कुराते हुए) माँ, पापा हमसे यही चाहते थे कि हम साथ रहें और खुश रहें।

बेटा: माँ, क्या हम पापा के पसंदीदा गाने सुन सकते हैं? वो हमेशा उसे सुनकर उत्साहित हो जाते थे।

माँ: हाँ बेटा, चलो हम सब मिलकर वे गाने सुनते हैं।

बेटा: माँ, मैं सोच रहा हूँ कि हम पापा की स्मृति में एक छोटा सा कार्यक्रम रख सकते हैं जिसमें हम उनके दोस्तों और रिश्तेदारों को आमंत्रित करके, उनके जीवन के किस्से सुना सकते हैं।

माँ: यह बहुत अच्छा विचार है, बेटा। इससे हमें भी उनकी यादों के साथ हंसने-मुस्कुराने का मौका मिलेगा। किसीने बिल्कुल सच कहा था की, 'स्मृति मानव जीवन का एकमात्र सहारा हैं। व्यक्ति का भौतिक स्वरूप नहीं, बल्कि उसमें समाहित विचार और मूल्य, जो उसकी अनुपस्थिति में प्रतिबिंबित होते हैं और उसे यादगार बनाते हैं'।

(समाप्त)

संवाद: "मानव जीवन दुःख और सुख का समावेश है। असली शक्ति एक साथ रहते हुए, एक-दूसरे का सहारा बनकर, जीवन को खुशी से जीने में है।"

- **प्रमा सुराना , ९ सी**

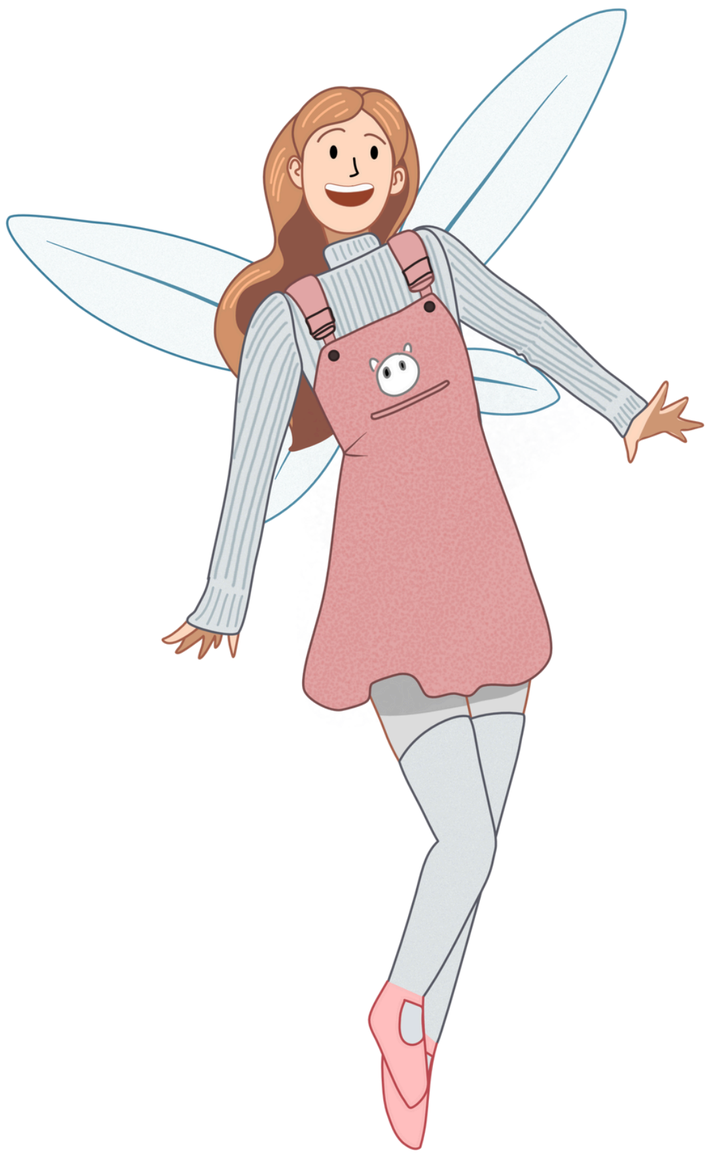

नन्ही परी और उसका सपना

एक बार की बात है, एक नन्ही परी जिसका नाम तारा था, बादलों के ऊपर एक सुन्दर और खुशहाल परीलोक में रहती थी। तारा का सपना था कि वह धरती पर जाकर वहां की खूबसूरती देखे और वहां के बच्चों के साथ खेले।

एक दिन, तारा ने अपनी इच्छा अपनी माँ को बताई। उसकी माँ ने कहा, "अगर तुम्हें धरती पर जाना है तो तुम्हें एक विशेष काम करना होगा। तुम्हें किसी की मदद करनी होगी ताकि तुम्हारे पास धरती पर रहने का अधिकार हो।"

तारा ने यह सुनकर हांमी भर दी और धरती पर उतर गई। धरती पर आते ही उसने देखा कि एक बच्चा रो रहा था। तारा उसके पास गई और पूछा, "तुम क्यों रो रहे हो?"

बच्चे ने कहा, "मेरी गेंद पेड़ पर अटक गई है और मैं उसे नीचे नहीं ला पा रहा हूँ।"

तारा ने अपनी जादुई छड़ी निकाली और कहा, "चिंता मत करो, मैं तुम्हारी मदद करूंगी।" उसने अपनी छड़ी से पेड़ पर एक हल्का स्पर्श किया और गेंद धीरे-धीरे नीचे गिर गई।

बच्चा बहुत खुश हुआ और तारा को धन्यवाद दिया। तारा ने महसूस किया कि मदद करना कितना सुखद होता है। उसने धरती पर और भी बच्चों की मदद की और उन्हें खुशियां दीं।

जब तारा वापस परीलोक पहुंची, उसकी माँ ने उसे गले लगाते हुए कहा, "तुमने बहुत अच्छा काम किया, तारा। अब तुम धरती पर जब चाहो जा सकती हो और बच्चों के साथ खेल सकती हो।"

तारा बहुत खुश हुई और उसने वादा किया कि वह हमेशा दूसरों की मदद करेगी।

शिक्षा: दूसरों की मदद करने से हमें खुशी मिलती है और हमारे सपने सच हो सकते हैं।

- नाव्या दुग्गर ७ 'ए'